26/8/1964
(म्युज़िक बजा) .....(बच्ची ने कहा– बाबा, ये टेप सभी सेन्टर्स तक जाती है। ग्रीटिंग्स पढ़ेंगे?) अच्छा, ग्रीटिंग्स काहे की ? जन्माष्टमी की ? अच्छा, क्यों नहीं, वाह! ये टेप पहले-2 कहाँ जाएगा? (बच्ची ने कहा– दिल्ली जाती है, दूसरी बॉम्बे जाती है) अच्छा, हैलो, सभी शिवबाबा के रूहानी सेन्टर्स निवासी ब्राह्मण कुलभूषण... स्वदर्शन चक्रधारी सौभाग्यशाली बच्चों प्रति मात-पिता व बाप-दादा आज बड़ी दिल व जान, सिक व प्रेम से याद-प्यार दे रहे हैं। अच्छा, यहाँ का तो समाचार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का जो बच्चों को समझाया और खेल-पाल कराया, सो तो समाचार आपे ही लिख देंगे मुरली में और तुम बच्चों ने भी। तुम बच्चों को कोई उत्सव नहीं मनाना है, तुमको उत्सव मनाना है सर्विस का। ऐसे नहीं कि अच्छा कपड़ा (पहनना–)करना है, मंदिर में जाना है, फलाना करना है, नहीं। तुम बच्चों को जाकर समझाना है कि श्रीकृष्ण का जन्म कब हुआ था? श्रीकृष्ण को जो सतयुग के पहले प्रिन्स का पद मिला है, यह इनको कर्म किसने सिखलाया जो ऐसा विश्व का पहला प्रिन्स बना? श्रीकृष्ण 84 जन्म कैसे लेता है? फिर इस समय में, अंतिम जन्म में बहुत जन्म के अंत के जन्म में भी फिर देखो बाप कैसे आ करके शिवबाबा कहते हैं कि मैं इनके अंतिम जन्म में फिर प्रवेश करता हूँ। फिर इनका नाम प्रजापिता रखता हूँ; क्योंकि मुझे फिर ब्राह्मण धर्म स्थापन करना होता है। तो ज़रूर यहीं भारत में चाहिए। तो जन्म भी भारत में लेते हैं और ज़रूर किसमें प्रवेश करेंगे। तो वो बोल देते हैं कि पता है मैं किसमें प्रवेश करता हूँ? जो पहले-2 श्री ल०ना० थे, फिर उनके बहुत जन्म के अंत के जन्म में जो उनका बुड्ढा शरीर है उनमें मैं प्रवेश करता हूँ। फिर उनका नाम प्रजापिता रख देता हूँ। प्रजापिता नाम भी उनका क्यों रखता हूँ? क्योंकि ब्रह्मा के मुखकमल से फिर मुझे ब्राह्मण और ब्राह्मणियों (की रचना रचनी है)। तो मैं ब्रह्मा कहाँ से लाऊँ? तो इसलिए मैं इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ; क्योंकि मेरा बच्चा बन जाते हैं। सन्यास करते हैं तो सन्यासी का नाम हमेशा बदलता है। तो फिर उनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। अच्छा, ये तो तुम बच्चों को राज़ समझाया। तुमको किसलिए समझा रहे हैं कि औरों को समझाओ। तो तुम्हारा जो उत्सव है; तुमको उत्सव क्या करना है? सर्विस करनी है। ऐसे नहीं कि कपड़ा (पहनना–)करना है, मंदिर में जाना है, मिश्री खाना है। मंदिर में तो ज़रूर भाषण करना चाहिए। किस मंदिर में? या ल०ना० या राधे-कृष्ण या शिव का मंदिर। वो बिल्कुल ठीक है। उनमें शिव की बैठकर महिमा करनी है (कि) कैसे पतित-पावन है। (बच्ची ने कहा– अब गुलज़ार तो मथुरा में गई है) हाँ, गुलज़ार भी मथुरा में गई है, वो भी तो अच्छा है; क्योंकि कृष्ण की पुरी गाई जाती है। श्रीकृष्ण के मथुरा में, वृंदावन में; वृंदावन में एक कुंज गली है। कहते हैं कि कुंज गली में रात को कृष्ण की रास होती थी। वो रास में सब शामिल होते थे। रास काहे का? डांस होती थी अर्थात् वो ज्ञान सुनते थे। फिर वो ज्ञान सुन करके, अगर कोई आ करके उल्टा-सुल्टा बोलते थे कि ये क्या करते हैं, फलाना करते हैं, तो उनका घट घुट जाता था। वो गूँगा बन जाते थे, कुछ बोल नहीं सकते थे। तुम जानती हो कि जो बाबा का ज्ञान सुन करके निंदा करते हैं या ट्रेटर बनते हैं (तो) गूँगे हो जाते हैं। कुछ भी ज्ञान कथन नहीं कर सकते हैं। उसको गूँगा कहा जाता है। समझा!

अच्छा, अभी ये तो जैसे कि मुरली बजाता हूँ। हम तुम बच्चों को याद-प्यार दे रहा हूँ और सर्विस का समाचार तो देते हैं। (किसी ने कहा– आत्मप्रकाश) जो सर्विस अच्छी करते हैं उनको आफरीन दी जाती है। तो देखो, दिल्ली में बहुत अच्छी बच्ची सर्विस की होगी और बाबा जानते हैं कि सर्विसएबुल तो बाबा के दिल पर चढ़े हुए हैं। जैसे हमारा जगदीश है और दूसरी, वहाँ गुलजार बच्ची रहती है और राजकुमार है और अभी जो मैंने भेजा है हमारे सिकीलधे बच्चे आत्मप्रकाश को, वो बहुत मीठा बच्चा है एकदम। वो भी अभी सर्विस कर रहे हैं। मकान के पिछाड़ी भी दौड़ते होंगे, सर्विस भी करते होंगे। दिल्ली में तो ऐसे मीठे-2 ऑलराउण्डर को भी। उनका ऑलराउण्डर नाम क्यों रखा? क्योंकि हम ऑलराउण्डर 84 जन्म भोगते हैं। सतयुग से लेकर ऑलराउण्ड हमारी सर्विस है। जो बच्चे ऑलराउण्ड सर्विस करते हैं (उनको कहो) खाना पकाओ तो ये पकाया, सर्विस करो तो ये किया, झाड़ू लगाओ तो ये किया। उसको कहा जाता है ऑलराउण्ड सर्विस। तो ऑलराउण्ड सर्विस वाले बाबा को बहुत प्यारे लगते हैं। ऑलराउण्डर को, और किसको याद प्यार देवें? (किसी ने कहा– सुदेश) वाह! बहुत अच्छी बच्ची है ये सुदेश। इनको भी यादप्यार देना। अच्छा, दिल्ली को दूँगा, और भी तो बहुत सेन्टर्स के बच्चे हैं। तुम बोलती हो कि ये जो.....सभी सेन्टर्स में जाएँगे। कौन-से? (क्या) दिल्ली के सभी सेन्टर्स में? (किसी ने कहा– नहीं-2, सभी) सभी सेन्टर्स में से। अभी देखो...दिल्ली को यादप्यार, फिर दिल्ली के आस-पास बड़े-2 सेन्टर तो हैं। नम्बरवन सेन्टर है बॉम्बो। (किसी ने कहा– पूनो)। बॉम्बो और उनका बच्चा पूनो। इनसे पीछे फिर है दिल्ली सेन्टर सबसे अच्छा। बाबा महिमा कर रहे हैं कि पीछे दिल्ली के सब सेन्टर मिल करके, बॉम्बे एक सेन्टर, दो सेन्टर, तो वो भी हैं तीन सेन्टर। तो दिल्ली के भी सेन्टर बहुत अच्छे हैं..सर्विस करते हैं और बहुत काँटों से फूल बनते रहते हैं। अच्छा, फिर हम कहाँ जावें? मेरठ भी बहुत अच्छी है। वो बहुत मीठा देवता बैठा हुआ है। क्या नाम है उनका? (किसी ने कहा– कमल) कमल सुन्दरी बच्ची और सन्देशी भी बड़ी अच्छी है। वो अच्छी-2 मुरली प्वाइंट्स भी समझाती है। छटकेली बच्ची है। बहुतों को अच्छा बनाती है। अच्छा, फिर उनके साथ सर्विसेबुल और भी साथी हैं। अच्छा, फिर कहाँ जाऊँ? फिर कानपुर में जाऊँ। वहाँ भी अच्छे-2 बच्चे हैं। बहुत सेन्टर्स हैं। बहुत सर्विस करते हैं। अभी जो सर्विस करेगा वो अपनी सर्विस करते हैं। समझे! ऐसे समझे कि हम अपनी सर्विस से अपनी तकदीर बनाते हैं। ऐसे मीठे लाडले बच्चे, तकदीर को बनाते रहो। देखो, अमृतसर वाह! अभी तो फिर कौन सुनावे। अभी तो अमृतसर में जाने वाले हैं। वहाँ बहुत अच्छी-2, मीठी-2 सिकीलधी बच्चियाँ हैं। अमृतसर के साथ बटाला भी कम नहीं है। जालंधर भी कम नहीं है। जालंधर भी कमाल करते हैं। वहाँ भी बड़े अच्छे-2, सतगुरुप्रसाद जैसे बच्चे, सतनाम जैसे बच्चे, भले कोई-2 बच्चे घुटके खाते हैं; परन्तु माया तो ज़रूर घुटका खिलाएगी ना। तो घुटका खा करके खड़े हो जाना चाहिए। जैसे देखो, एक खिलौना होता है, चमाट लगाते हैं तो फिर ऐसे-2 करके फिर खड़े हो जाते हैं। तो माया तो ज़रूर... फिर कभी हिलना नहीं चाहिए। जैसे हमारा कोई.....अच्छा-2, बैटरी फौरन याद आ गई। किसको यादप्यार देवें? (किसी ने कहा– जगदीश और करनाल) वाह! करनाल

कम है क्या। करनाल भी अच्छी है ; मगर पता नहीं उनके पास टेप है या नहीं, फिर है तो सही शायद। अच्छा, दे देंगे उनको भी टेप..। अमृतसर में एक प्रिंसिपल है– जगदीश। बड़ा अच्छा बच्चा है। फिर उनकी जो हाफपार्टनर युगल है, वो सवेरे में यहाँ आई थी। बच्ची बहुत अच्छी है। वो टीचर भी है। ....प्रिंसिपल है। वो तो हद की शिक्षा पढ़ाती है। तो यहाँ भी अगर वो बेहद की शिक्षा में भी लग जावे तो डबल सर्विस। तो जो पुरानी ब्रह्माकुमारियाँ हैं वो सिंगल सर्विस पर हैं। सिर्फ रूहानी। वो जिस्मानी और रूहानी कमाल कर देवे। बहुत ऊँच पद ले सकती है अगर श्रीमत पर चलने लग पड़े तो। अच्छा, और किसको यादप्यार देवें? (बच्ची ने कहा– कुमारी) बहुत कुमारियाँ हैं। पटना में भी टेप जाते हैं। वहाँ भी तो बाबू जी है हीरेलाल जी। देखो कितने सेंटर। पटना में दो-तीन सेन्टर हैं। कलकत्ते में सेन्टर है। कुछ कमाल की है उसने भी, कोई कम थोड़े ही है। तो उसको भी बाबा यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा, कलकत्ता वालों को भी। और कहाँ है? और तो कोई जगह टेप है नहीं। (किसी ने कहा– बैंगलोर) हाँ, बैंगलोर। वाह! बैंगलोर में वो जो पुष्पा है, रोज़ी है और लक्ष्मण है। वो तो है ही बाबा की। खाँसी होती है; इसलिए सबसे विदाई।

26/8/1964 रात्रि क्लास

बाप–माँ, बाप-दादा वा ईश्वर के घर में बैठे हैं। फिर यहाँ से जब जाएँगे (तो) किसके घर में होंगे? सब बच्चे जाएँगे? बच्चे कहाँ से आए हैं ? कौन-से सेन्टर से? (किसी ने कहा– धानापुर) जब धारनापुर में जाएँगे और घर में होंगे, फिर क्या समझेंगे? वहाँ कहेंगे अपने घर में बैठे हैं और यहाँ कहते हैं ईश्वर के घर में बैठे हैं। कितना फर्क ! अपने घर में तो सभी कोई बैठते रहते हैं, सारी दुनियाँ (बैठती है) ; परन्तु यहाँ एक वण्डरफुल बात है। इस समय में कहाँ बैठे हो? वो मात-पिता, परमपिता परमात्मा, जिसको हम प्रभु, ईश्वर कहते हैं, हम उनके घर में बैठे हैं। बस, यहाँ ही कोई बैठेगा तब बोलेगा हम घर में बैठे हैं। जब घर में जाएगा तो बातें ही न्यारी। यहाँ के बोल ही ईश्वरीय बोल न्यारे और वहाँ के बोल ही न्यारे होते हैं। यहाँ ये तो समझते हैं ना कि बरोबर हम परमपिता परमात्मा के घर बैठे हैं, परमपिता (को) पिता तो कहते ही हैं; और वहाँ जा करके अपने घर में बैठेंगे, पता नहीं वहाँ क्या-2 सुनेंगे, क्या-2 ख्याल उठेंगे, धंधे-धोरी, मिट-मायट, दोस्त फलाना। कितना फर्क है! (रह) सकते हैं; क्योंकि वो लौकिक संबंध है, निभाना है। वहाँ ही लौकिक संबंध में रह करके परलौकिक संबंध से तोड़ निभाना है। वो तो है लौकिक बंधन। भले उनसे भी निभाना है, इनसे भी निभाना है; बड़ी युक्ति चाहिए। सिर्फ अंतिम जन्म तोड़ निभाना है। ये तो फिर नए दैवी संबंध से तोड़ निभाना पड़ेगा। ये लौकिक संबंध से हिसाब-किताब पूरा होता है। ये परलौकिक ही कहेंगे ना, स्वर्ग को भी परलोक कहेंगे और शांतिलोक को भी परलोक कहेंगे। जाते होंगे तभी समझते होंगे हम ईश्वर के घर से कहाँ जा रहे हैं या ऐसे ....आते हैं, जाते हैं; जैसे कोई। आप जब जाते हो तो क्या भासना आती है, बॉम्बे में थे तो? (किसी ने कहा– आपकी गोद में ही बैठे हैं) आपकी गोद में कहाँ बैठे हो! यह तो यहाँ बैठे हैं। तुम

भी जाएँगी तो ऐसे ही समझेंगी। जहाँ ईश्वर है वहाँ बैठने से ही कहेंगे हम परमपिता के साथ बैठे हैं; पर जब दूर चले जाएँगे तब तो बात ही और हो जाती है ना। भला मेरे लिए क्या समझते हो? (किसी ने कहा– याद तो बहुत करते हैं) इन बाबा के लिए क्या समझते हो? जहाँ भी होंगे, बोलेंगे– हम ईश्वर के साथ बैठे हैं। समझते हो? कितने फायदे की बात है लोन लेना ईश्वर को, ईश्वर का लाडला बनना। तुम क्या समझते हो? कितनी वण्डरफुल बातें हैं। ये कोई गीता शास्त्र (में नहीं है)। और शास्त्रों को तो छोड़ दो; क्योंकि भारत के तो सभी शास्त्र अगड़म-बगड़म हैं। अगर गीता भी लेवें तो उनमें कुछ भी नहीं है। तो ज़रूर मनुष्य बिचारे मूँझते होंगे ना कि क्या है ! यहाँ की बातें न्यारी हैं। बाबा के साथ में होंगे वो भी ऐसे ही कहेंगे कि हम ईश्वर के घर में बैठे हैं। कहाँ भी जाकर बैठेंगे (तो ऐसे ही कहेंगे)। ड्रामा भी ऐसे नहीं कहता है कि कोई कहे कि हम बैठ जाएँ तो बैठ सकें। ये भी नहीं हो सकता है। हाँ, ऐसे भी होते हैं, कोई ऐसे <u>सर्विस</u> साथी हैं जिनको साथ में रखना है। बहुत थोड़े हैं। विचार करो, कोई भी नहीं हैं जो सदैव साथ रहते हैं। दीदी, साथ में कोई रहते हैं? जैसे ये बाबा शिव के साथ सदैव रहते हैं। और भी कोई है? विचार करो....दूरंदेशी बनो। समझता है कोई? मम्मा ? (बच्ची ने कहा– नहीं बाबा, मिस हुआ है, विश्वकिशोर भी कई.....) नहीं, कई बार अलग आते हैं। कोई भी साथ में कायम नहीं रहते हैं, सिवाय एक के। ईश्वर के साथ सिवाय एक (के)। वो भी एक और ये भी साथ रहने वाला एक ही है। (किसी ने कहा– आपको एक बाबा है, हमको दो बाबा है, हमको धारणा दो है)। देखो, इसमें तुम ऊँच ठहरे। ड्रामा ऐसा (है कि) भले बाबा कहते हैं मैं साथ में हूँ; परन्तु बाबा को भी ये भूल जाता है कि मैं साथ मैं हूँ। हर वक्त मुझे ये नशा नहीं रहता है। अगर हर वक्त नशा रहे तो मुझे ऐसे ही देखो जैसे खुशी में बैठा हुआ हूँ ऐसे। समझा!.....कोशिश बहुत की जाती है; परन्तु नहीं रह (सकते), भूल जाते हैं। (किसी ने कहा– लोग देखते तो हैं) बाबा अनुभव बताते हैं ना। बाबा कहते हैं ना कि हम भोजन पर बैठता हूँ और शिवबाबा को याद करूँ, उस खुशी में बैठूँ, (ये) भूल जाते हैं। कभी ईश्वर के घर में नहीं होता होगा। ये बातें हैं वण्डरफुल। (नित्य) याद करूँ तो फिर और क्या चाहिए! अगर नित्य याद करते ही रहें तो फट कर्मातीत अवस्था हो जाए; परन्तु नहीं, ये खेल बड़ा वण्डरफुल रचा हुआ है, जिसको सोच-2 वण्डर खाते हैं, आश्चर्य खाते हैं। (बच्चे) हैं मौज में। कहाँ के हैं ये बच्चे? धानापुर। .....तुम एक दिन देखेंगी यहाँ भी फिर बैठने की जगह नहीं होगी ; क्योंकि झाड़ को तो वृद्धि को पाना ही है ज़रूर। इसमें कोई संशय नहीं। स्थापना कल्प पहले मुआफ़िक होनी है, यह सरटेन है। हर एक बात निश्चय करके और अति इन्द्रिय सुख में रहने लायक है। (य)ही सिर्फ याद करे कि गॉड फादर पढ़ाते हैं, तो एक ये बात कुछ कम है क्या! एक-एक बात में कोई अगर टिके तो भी; और ये भी याद रखे कि 84 जन्म पूरा हुआ, अभी चलें अपने वतन की ओर, तो भी स्थायी याद नहीं रह सकती है। हाँ, ये ज़रूर है कि पुरुषार्थ किया जा रहा है सब; क्योंकि सिर्फ समझने बैठना है कि बस, बाबा इनमें है, ख़लास नहीं। ये महसूसता आनी चाहिए। ये जब भी भोजन पर बैठे रहें और याद करते रहते हैं तो महसूसता

आती है और अगर भूल जाते हैं तो महसूसता गुम हो जाती है; क्योंकि अनुभव तो हर एक अपन का बताते हैं। तो बाबा भी अनुभव तो बताते हैं ना। जानता हूँ कि इस मकान में बाबा की प्रवेशता है, (फिर भी) भूल जाते हैं। ये भी विवेक कहता है कि सदैव तो बैठने वाला है नहीं। ज़रूर स्थायी तो नहीं बैठा हुआ है, आता-जाता है तो फिर ये भी भूल जाते हैं। याद आती है और भूल जाते हैं। सबसे अच्छी बात ये भी है कि चक्कर पूरा हुआ है, जाना है ; क्योंकि एक्टर्स तो हैं ही। तो एक्टर के लिए ये बात अच्छी शोभती है कि पूरा हुआ, अभी जाते हैं घर। ये तो जानते हैं कि घर जाते हैं फिर पार्ट बजाने आना है। एक्टर के लिए ये अच्छी बात है कि खेल पूरा हुआ है। ये वस्त्र उतारने ही हैं ज़रूर और घर जाना है। जानते हैं कि यहाँ आते हैं (और) वस्त्र धारण कर पार्ट बजाते हैं। पहले नंगे आए थे, फर्स्टक्लास सतोप्रधान वस्त्र मिले थे। अभी तमोप्रधान हो गए हैं। इसको वस्त्र भी कहेंगे, चोला भी कहेंगे (बात एक ही है)। अब फिर जाते हैं, फिर फर्स्ट क्लास (वस्त्र मिलेगा)। ये भी याद रहते रहे तो ये भी स्वदर्शनचक्रधारी हुआ ; पर याद रहता रहे और नोट करे कि मैं इतना समय ये भी याद करता हूँ तो भी अहो सौभाग्य!....क्योंकि जन्माष्टमी वगैरह तो हम जन्म बाई जन्म मनाए। अब वो मनाने की बात बच्चों से छूट गई। अभी फिर औरों को समझाना है ये महाभारत की लड़ाई वही है और श्रीकृष्ण का राज्य स्थापन हो रहा है। ये भी समझना कोई के लिए कि श्रीकृष्ण पुरी स्थापन हो रही है गोया समझना चाहिए कि कृष्ण की सारी राजधानी होगी। जो फिर ल०ना० की राजधानी तो कहना पड़े। सतयुग की राजधानी स्थापन हो रही है; क्योंकि कलहयुग की राजधानियों को आग लग रही हैं। ये भी तुम भाषण में समझा सकते हो कि आज कृष्ण जन्म अष्टमी मना रहे हैं और .... श्रीकृष्ण का राज्य तो पास्ट हो गया वा ल०ना० का राज्य तो पास्ट हो गया। अभी फिर महाभारी महाभारत (लड़ाई) लगती है, फिर भी उनका राज्य आना है। ये भी ढिंढोरा पिटाना पड़े। ये युक्तियाँ रच करके, टॉपिक्स निकाल करके यहाँ ढिंढोरा पिटवाना है या प्रभातफेरी भी जब कभी <u>कोई</u> करते हैं, कहते हैं प्रभातफेरी में एक या दो या तीन निकल पड़ते हैं; परन्तु प्रभातफेरी जो काँग्रेस वालों का था, फिर हम लोगों को शोभता नहीं हैं; क्योंकि हमारी रसम-रिवाज़ सबसे न्यारी है। सर्विस वालों को कोई न कोई नई-2 युक्तियाँ निकालते रहना चाहिए। फिर वो ही बात रिपीट (हो), वो भी ठीक नहीं। नई–2 । उसको फिर कहेंगे कि सर्विस को बढ़ाने के लिए विचार-सागर-मंथन कर नई-2 बातें निकालते हैं। बजाओ बच्ची। (म्युज़िक बजा) मीठे-2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता, बाप-दादा का याद प्यार और गुडनाइट।✷✷✷